NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

कुक्कुट पालन में कड़कनाथ नस्ल

सुनील सिंह, प्रवीण कुमार मिश्र, प्रवेश कुमार, श्रीप्रकाश सिंह, शेष नारायण सिंह, अशोक कुमार पाण्डेय एवं प्रदीप कुमार

प्रस्तावना:

कड़कनाथ भारत मे पायी जाने वाली कुक्कुट की एक महत्वपूर्ण और अत्यंत पुरानी प्रजाति है। कड़कनाथ को 'कालामसी' काला माँस मुर्गा कहते है।

यह प्रजाति मूलतः मध्यप्रदेश के झबुआएवं धार जिलों व गुजरात और राजस्थान में भी पाई जाति हैI यह प्रजाति मध्यप्रदेश के आदिवासी बरेला, भिलाला, में लम्बे समय से पाली जा रही है। कड़कनाथ के माँस मे ''मिलेनिन'' नामक रंगद्रव्य होता है जिससे इसका मांस काला होता है और इसे "**कामोद्दीपक**" माना जाता है। इसकी त्वचा, चोच, टांग, पंजा और तलवा गहरे भूरे रंग का जबकि जीभ गहरे भूरे रंग अथवा हल्के काले रंग की होती है। कलगी, ललरी, लोलकी हल्के से गहरे भूरे अथवा बैगनी रंग के होते है।

कड़कनाथ प्रजाति की मुख्य विशेषताए:-

- इसका मांस काले रंग का होता है, तथा पंख काले व नील रंग का होता है।
- प्रथम दिन चूजे का वजन लगभग 25-30 ग्राम होता है।
- 50-60 दिनों बाद शारीरिक वजन 1.2-1.5 किग्रा होता है।
- वयस्क नर व मादा का शारीरिक भार क्रमशः 1.5-2.0 तथा 1.0 -1.5 किग्रा तक होता है।
- वार्षिक अंडे का उत्पादन लगभग 110 से 125 तक होता है, तथा अंडे का भार 35-48 ग्राम तक होता है।
- इस प्रजाति में मांस की प्रतिशत मात्रा 67-68 तक होती है।

कड़कनाथ प्रजाति की किस्मे:

कड़कनाथ प्रजाति की मुख्य रूप से 3 किस्मे है

1. **जेट ब्लैक-** नर और मादा दोनों पूर्ण काले होते है।
2. **पैन्सिल-** इस किस्म मे नर और मादा के पंख काले होते है जबकि गर्दन के पास सफ़ेद पंख होते है।
3. **गोल्डेन-** इस किस्म के नर और मादा काले रंग के होते है जबकि पंख सुनहरा रंग का होता है।

माँस का पोषकमूल्य-

कड़कनाथ का माँस विशिष्ट स्वाद वाला होता है। माँस मे अन्य कुक्कुट प्रजाति (18-20%) की तुलना मे प्रचुर प्रोटीन (25%) पायी जाती है। साथ ही यह उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन है। हमारे शरीर के लिए आवश्यक 8 अमीनो एसिड इसके प्रोटीन मे पाये जाते है। इसके अलावा इसमे कुल 18 अमीनो एसिड पाये जाते है। सामान्य ब्रायलर के माँस मे वसा की मात्रा 13-25% तक होती है, जबकि कड़कनाथ मे इसकी मात्रा बहुत कम (0.73-1.05%) होती है। साथ ही साथ इसके मांस मे कोलेस्ट्राल 180 मिलीग्राम/100 ग्राम खाद्य भाग मे पायी जाती है। जो की हृदय एवं उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए निरापद अथवा महत्वपूर्ण होगा। इसके माँस मे विटामिन बी1,बी2,बी6,बी12, सी और इ होता है, जो मानव शरीर की दुर्बलता को दूर करता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इन्ही गुणों के कारण

सुनील सिंह, प्रवीण कुमार मिश्र, प्रवेश कुमार, श्रीप्रकाश सिंह, शेष नारायण सिंह, अशोक कुमार पाण्डेय एवं प्रदीप कुमार

कृषि विज्ञान केंद्र, सोहना, सिद्धार्थनगर

उत्तर प्रदेश के जिलों में कड़कनाथ 600-800 रुपये प्रति किग्रा बाजार में बिकता है, जबकि महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश में 1200 से 1500 रुपये / किग्रा तक बिक्री पाई जाती है।

कड़कनाथ एक विशिष्ट और अत्यंत पुरानी देसी प्रजाति है, जो मध्य प्रदेश के जंगलों में पाए जाते है, इसलिए इसका रख रखाव बहुत आसान है। वैसे तो



चित्र-1: **कड़कनाथ प्रजाति की मुख्य 3 किस्मे।**

अंडे का पोषक मूल्य

कड़कनाथ प्रजाति के अंडे में विशेष गुण पाया जाता है. इसमें अन्य देसी प्रजातियों के तुलना में न्यूनतम वसा व कोलेस्ट्राल पाया जाता है तथा प्रोटीन की मात्रा 25 प्रतिशत तक, जो कि अन्य प्रजातियों (18-20 प्रतिशत) से उच्च पाया जाता है. इसी गुणों के कारण उत्तर प्रदेश के जिलों में कड़कनाथ के अंडे 15-20 रूपये प्रति अंडा मार्केट मे बिकता है, जबकि महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश में 100 से 120 रुपये प्रति अंडा तक बिक्री होता है।

आवास का प्रबन्धन:-

कड़कनाथ को खुला आवास प्रणाली एवं अर्धसघन प्रणाली मे भी रखा जा सकता है परन्तु व्यावसायिक रूप से इन प्रणालियों मे प्रति पक्षी आय बहुत कम आती है। अतः व्यावसायिक स्तर पर कड़कनाथ को सघन प्रणाली (डीप लिटर प्रणाली) मे रखते है। सघन आवास का आधार 1.5 फीट जमीन से नीचे और 1.0 फीट जमीन से ऊपर होनी चाहिए ताकि बाहरी पानी का रिसाव व जमाव न हो सके । सघन आवास की लंबाई आवश्यकतानुसार 30-40 फीट पूर्व से पश्चिम दिशा जिससे सीधेधुप से बच सकें और चौड़ाई

30 फीट से ज्यादा नहीं हो ताकि शुद्ध वायु का आवागमन हो सके। आवास की बाहरी दीवार की ऊंचाई 10 फीट रखते है जिसमे आधार से 2 फीट की दीवार फिर 8 फीट जाली रखते है और छत के बीच की उचाई 12 फीट रखते है। छत से 2 फीट का छज्जा बाहर निकालना चाहिए जिससे बरसात का पानी अन्दर नहीं आये। किसान के बजट के अनुसार छत पुआल, नारियल के पत्तों, एस्बेस्टस, फाइबर या टीन के चादर की हो सकती है परंतु एस्बेस्टस आरामदेह और टिकाऊपन के हिसाब से उतम है। आवास का फर्श पक्का होना चाहिए जिससे फर्श सूखा रहे और चूहे, साँप जैसे बाह्य परभक्षी का खतरा टल सके। इस प्रणाली मे पक्षियों को सहप्राकृतिक जैसे आवास मे रखा जाता है। यह कड़कनाथ पालन करने का बढ़िया तरीका है जिसमे पक्षियों को ज्यादा से ज्यादा संख्या मे पाल सकते है।

आहार का प्रबन्धन

ब्यवसायिक स्तर पर कड़कनाथ पालन में होने वाले व्यय का 60-70 प्रतिशत केवल आहार मे लगता है। अतः यह जरूरी है की कम खर्चे मे उच्च गुणवत्ता वाला आहार तैयार किया जाये। कड़कनाथ के आहार मे कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज लवण और विटामिन की संतुलित मात्रा रहे इसके लिए 0-8 सप्ताह, 9-17 सप्ताह तथा 18 -72 सप्ताह तक के पक्षी के चूजो के लिए क्रमशः 23 प्रतिशत, 22 प्रतिशत तथा 20 प्रतिशत का प्रोटीन सहित आहार की आवश्यकता होती है।

स्वास्थ्य प्रबंधन:-

कड़कनाथ अत्यंत गर्मी और सर्दी की जलवायु मे भी भली भाँति जीवित रहते है। यद्यपि कड़कनाथ नस्ल और नस्लों से अत्यधिक कठोर और बीमारियों के लिए प्रतिरोधी है परंतु रानीखेत, गम्बोरो और मरेक्स बीमारी के मामले पाये जा चुके है। अतः इन बिमारियों से बचाव हेतु समय समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए. इसके आलावा कृमिनाशक 10, 13, 16, और 19 सप्ताह की आयु पर पाईप्रेजीन हेक्साहायड्रेट 50 मिली प्रति 100 पक्षियों को सुबह को पानी मे देते है।

उपरोक्त गुणों तथा महत्वपूर्ण जानकारी के आधार पर कृषक खेती किसानी के साथ कड़कनाथ प्रजाति के कुक्कुट पालन के माध्यम से अधिक आय प्राप्त कर सकता है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE